६. गिरिधर नागर

–संत मीराबाई

(१)

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई
जाके सिर मोर मुकट, मेरो पति सोई
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई ?
संतन ढिग बैठि–बैठि, लोक लाज खोई ।
अँसुवन जल सींचि–सींचि प्रेम बेलि बोई ।
अब तो बेल फैल गई आणँद फल होई ।।
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से बिलोई ।
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई ।।
भगत देखि राजी हुई जगत देखि रोई ।
दासी 'मीरा' लाल गिरिधर तारो अब मोही ।।

(२)

हरि बिन कूण गती मेरी ।।
तुम मेरे प्रतिपाल कहिये मैं रावरी चेरी ।।
आदि–अंत निज नाँव तेरो हीमायें फेरी ।
बेर–बेर पुकार कहूँ प्रभु आरति है तेरी ।।
यौ संसार बिकार सागर बीच में घेरी ।
नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो बूड़त है बेरी ।।
बिरहणि पिवकी बाट जौवै राखल्यो नेरी ।
दासी मीरा राम रटत है मैं सरण हूँ तेरी ।।

(३)

फागुन के दिन चार होरी खेल मना रे ।
बिन करताल पखावज बाजै, अणहद की झनकार रे ।
बिन सुर राग छतीसूँ गावै, रोम–रोम रणकार रे ।।
सील संतोख की केसर घोली, प्रेम–प्रीत पिचकार रे ।
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर, बरसत रंग अपार रे ।।
घट के पट सब खोल दिए हैं, लोकलाज सब डार रे ।
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर, चरण कँवल बलिहार रे ।।

— ० —

परिचय

जन्म : १५१६, जोधपुर (राजस्थान)
मृत्यु: १५४६, द्वारिका (गुजरात)
परिचय : संत मीराबाई बचपन से ही कृष्णभक्ति में लीन रहा करती थीं । बाद में गृहत्याग करके आप घूम–घूमकर मंदिरों में अपने भजन सुनाया करती थीं । मीराबाई के भजन और उपासना माधुर्यभाव से ओत–प्रोत हैं। आपके पदों में प्रेम की तल्लीनता समान रूप से पाई जाती है।
प्रमुख कृतियाँ : 'नरसी जी का मायरा,' 'गीत गोविंद', 'राग गोविंद,' 'राग सोरठ के पद' आदि ।

पद्‍य संबंधी

मीराबाई के सभी पद उनके आराध्य के प्रति ही समर्पित हैं । आपके पदों का मुख्य स्वर भगवत प्रेम ही है । प्रस्तुत पदों में आपकी उत्सुकता, मिलन, आशा, प्रतीक्षा के भाव सभी अनुपम हैं ।

शब्द संसार

कुल पुं.सं.(सं.) = वंश, घराना
ढिग क्रि.वि.(हिं.) = पास, निकट
मथनियाँ स्त्री.सं.(हिं.) = मथनी, दही मथने का साधन
रावरी सर्व.(दे.) = आपकी
चेरी स्त्री.सं.(हिं.) = चेली, दासी
नेरी स्त्री.वि.(दे.) = पास, निकट
छतीसूँ वि.(दे.) = श्रेष्ठ
कँवल पुं.सं.(दे.) = कमल
बलिहारना क्रि.(दे.) = निछावर करना

स्वाध्याय

*** सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

होली के समय आनंद निर्मित करने वाले घटक

(२) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

कन्हैया की विशेषताएँ

(३) इस अर्थ में आए शब्द लिखिए :

	अर्थ	शब्द
(१)	दासी	---------
(२)	साजन	---------
(३)	बार-बार	---------
(४)	आकाश	---------

(४) कन्हैया के नाम

(५) दूसरे पद का सरल अर्थ लिखिए ।

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए तथा उचित शीर्षक दीजिए :

अलमारी, गिलहरी, चावल के पापड़, छोटा बच्चा

अपठित पद्‌यांश

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

काम जरा लेकर देखो, सख्त बात से नहीं स्नेह से
अपने अंतर का नेह अरे, तुम उसे जरा देकर देखो ।
कितने भी गहरे रहें गर्त, हर जगह प्यार जा सकता है,
कितना भी भ्रष्ट जमाना हो, हर समय प्यार भा सकता है ।
जो गिरे हुए को उठा सके, इससे प्यारा कुछ जतन नहीं,
दे प्यार उठा पाए न जिसे, इतना गहरा कुछ पतन नहीं ।।

(भवानी प्रसाद मिश्र)

(१) उत्तर लिखिए :

१. किसी से काम करवाने के लिए उपयुक्त – ____

२. हर समय अच्छी लगने वाली बात – ____

(२) उत्तर लिखिए :

१. अच्छा प्रयत्न यही है – ____

२. यही अधोगति है – ____

(३) पद्‌यांश की तीसरी और चौथी पंक्ति का संदेश लिखिए ।

भाषा बिंदु

कोष्ठक में दिए गए प्रत्येक/कारक चिह्न से अलग-अलग वाक्य बनाइए और उनके कारक लिखिए :

[ने, को, से, का, की, के, में, पर, हे, अरे, के लिए]

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

BNQHTZ